राजा भोज का सपना

ऐसा कोई मनुष्य न होगा, जिसने महाप्रतापी राजा भोज का नाम न सुना हो! उनकी महिमा और कीर्ति तो सारे जगत् में व्याप्त है। बड़े-बड़े महीपाल उनका नाम सुनते ही काँप उठते थे और बड़े-बड़े भूपति उनके चरणों में अपना सिर नवाते थे। उनके दान ने दानी कर्ण को लोगों के हृदय से भुला दिया था और उनके न्याय ने विक्रमादित्य को भी पीछे छोड़ दिया था। कोई उनके राज्य में भूखा और नंगा न रहने पाता था। जो सत्तू माँगने आता, उसे मोतीचूर मिलता और जो गँजी चाहता उसे मलमल दिया जाता। राजा भोज पैसे की जगह लोगों को अशरफियाँ बाँटते और बारिश की तरह भिखारियों पर मोती बरसाते थे। वे एक-एक श्लोक के लिए ब्राह्मणों को लाख-लाख रुपया दे देते और एक-एक दिन में लाख-लाख गोदान कर देते थे, सवा लाख ब्राह्मणों को षट्रस भोजन कराके तब स्वयं भोजन करते थे। वे तीर्थयात्रा, स्नान-दान और व्रत-उपवास में सदा तत्पर रहते थे।

एक दिन शरद ऋतु में संध्या के समय सुंदर फुलवाड़ी के बीच स्वच्छ पानी के कुंड के तट पर जिसमें कुमुद और कमलों के बीच जल-पक्षी कलोलें कर रहे थे, रतन-जटित सिंहासन पर कोमल तकिए के सहारे स्वस्थ-चित्त से बैठे हुए राजा भोज महलों की सुनहरी कलसियाँ लगी हुई संगमरमर की गुम्जियों के पीछे से उदय होता हुआ पूर्णिमा का चाँद देख रहे थे और निर्जन एकांत होने के कारण मन ही मन में सोच रहे थे कि अहो! मैंने अपने कुल को ऐसे प्रकाशित किया है जैसे सूर्य के द्वारा ये कमल विकसित हो रहे हैं। क्या मनुष्य और क्या जीव-जंतु मैंने अपना सारा जीवन इन्हीं का भला करने में गँवाया है और व्रत-उपवास करते-करते अपने फूल से शरीर को काँटा बना दिया है। जितना मैंने दान दिया है उतना तो कभी किसी के ध्यान में भी न आया होगा। जिन-जिन तीर्थों की मैंने यात्रा की है वहाँ कभी पक्षी ने पर भी न मारा होगा। मुझसे बढ़कर इस संसार में और कौन पुण्यात्मा है और आगे भी कौन होगा! जो मैं ही कृतकार्य नहीं तो फिर कौन हो सकता है? मुझे अपने ईश्वर पर विश्वास है कि वह मुझे अवश्य अच्छी सद्गति देगा। ऐसा कैसे हो सकता है कि मुझ पर भी कोई कुछ दोष लगाए।

इसी समय दीवान ने पुकारा। भोज ने आँखें ऊपर उठाईं। दीवान ने साष्टांग दंडवत् की फिर सम्मुख आकर हाथ जोड़कर निवेदन किया, ''पृथ्वीनाथ! वे कुएँ सड़क पर बनकर तैयार हो गए हैं, जिनके लिए आपने हुक्म दिया था और आम के बाग़ भी सब जगह लग गए हैं। जो पानी पीता है, आपको आशीष देता है और जो उन पेड़ों की छाया में विश्राम करता है, वह आपकी समृद्धि की कामना करता है।'' यह सुनकर राजा भोज अति प्रसन्न हुए और कहने लगे-''सुन, मेरी अमलदारी भर में जहाँ-जहाँ सड़कें हैं, वहाँ-वहाँ कोस-कोस पर कुएँ खुदवा दिए जाएँ और सड़क के दोनों ओर पेड़ भी शीघ्र ही लगवा दिए जाएँ।''

तभी दानाध्यक्ष ने वहाँ आकर राजा भोज से निवेदन किया, ''धर्मावतार! जो ब्राह्मण हर साल पाँच हज़ार रुपए और जाड़ों में रज़ाई पाते हैं, द्वार पर खड़े हैं।'' यह सुनकर राजा भोज ने कहा, ''अब

उन्हें पाँच के बदले पचास हज़ार रुपए दिए जाएँ और रज़ाई की जगह शाल-दुशाला दिया जाए।'' दानाध्यक्ष दुशालों को लाने के लिए तोशेख़ाने में चला गया।

इमारत के दारोग़ा ने आकर राजा भोज को ख़बर दी कि महाराज, वह बड़ा मंदिर जिसको जल्द बना देने के लिए आपने हुक्म दिया था, आज उसकी नींव खुद गई है, पत्थर गाड़े जा रहे हैं और लुहार उसके लिए लोहा भी तैयार कर रहे हैं। राजा ने त्योरियाँ बदलकर उस दारोग़ा को खूब घुड़का और कहा कि मूर्ख, वहाँ पत्थर और लोहे का क्या काम है! मंदिर संगमरमर और संगमूसा से बनाया जाएगा और उसमें सब जगह सोने का प्रयोग किया जाएगा, जिससे भगवान भी उसे देखकर प्रसन्न हो जाएँ। इससे मेरा नाम इस संसार में अतुल कीर्ति पाएगा। यह सुनकर सारा दरबार पुकार उठा कि धन्य हो महाराज, आपने इस कलयुग को सतयुग बना दिया। हमें ऐसा लगता है कि आपने धर्म-कर्म करने के लिए ही इस जगत् में अवतार लिया होगा। आज आपसे बढ़कर और दूसरा कौन ईश्वर को प्यारा होगा। हमने तो पहले से ही आपको साक्षात् धर्मराज मान लिया है।

दूसरी ओर व्यास जी ने कथा आरंभ कर दी, भजन-कीर्तन होने लगा। चाँद सिर पर चढ़ आया, घड़ियाली ने बताया कि महाराज आधी रात हो गई है। राजा की आँखों में नींद छा रही थी, व्यास जी कथा कहते थे पर राजा को ऊँघ आती थी। वे उठकर रनिवास में चले गए, रानियाँ उनके पैर दबाने लगीं। राजा को नींद आ गई तो स्वप्न में क्या देखते हैं कि वह बड़ा संगमरमर का मंदिर बनकर तैयार हो गया। जहाँ कहीं भी उस पर नक़्क़ाशी का काम किया गया है तो बारीकी और सफ़ाई में हाथी दाँत को भी मात कर दिया है, जहाँ कहीं पच्चीकारी का हुनर दिखलाया है तो जवाहिरों को पत्थरों में जड़कर तसवीर का नमूना बना दिया है, कहीं लालों के गुल्लालों पर नीलम की बुलबुलें बैठी हैं तो कहीं ओस की जगह हीरों के लोलक लटकाए गए हैं, कहीं पुखराजों की डंडियों से पन्ने के पत्ते निकालकर मोतियों के भुट्टे लगाए गए हैं, सोने की चोबों पर कमख़ाब के शामियाने और उनके नीचे बिल्लौर के हौज़ों में गुलाब और केवड़े के फुहारे छूट रहे हैं। उसमें सैकड़ों कपूर के दीपक जल रहे हैं। राजा यह देखते ही मारे घमंड के फूलकर मशक बन गया। कभी नीचे, कभी ऊपर, कभी दाहिने एवं कभी बाएँ निगाह करता और मन में सोचता कि क्या अब इतने पर भी मुझे कोई स्वर्ग में जाने से रोकेगा या पवित्र पुण्यात्मा न कहेगा? मुझे अपने कर्मों पर पूरा भरोसा है।

इसी समय राजा भोज उस स्वप्न के मंदिर में खड़ा-खड़ा देखता है कि एक ज्योति रूपी पुरुष उसके सामने आसमान से उतरकर नीचे आ रहा है। उसका प्रकाश तो हज़ारों सूर्यों से भी अधिक है, परंतु जैसे सूरज को बादल घेर लेता है, वैसे ही उसने मुँह पर चादर डाल रखी है नहीं तो राजा की आँखें उस पर कैसे ठहर सकती थीं परंतु इस पर भी राजा की आँखें मारे चकाचौंध के झपकी चली जाती थीं। राजा उसे देखते ही काँप उठा और लड़खड़ाती-सी ज़ुबान से बोला, ''हे महाराज, आप कौन हैं और मेरे पास किस प्रयोजन से आए हैं।'' उस देव पुरुष ने बादल की गरज के समान गंभीर वाणी में उत्तर दिया-''मैं सत्य हूँ। मैं अंधों की आँखें खोलता हूँ, उनके आगे से धोखे की पट्टी हटाता हूँ,

मृगतृष्णा के भटके हुओं का भ्रम मिटाता हूँ और स्वप्न के भूले हुओं को नींद से जगाता हूँ। अरे भोज, यदि कुछ हिम्मत रखता है तो आ, मेरे साथ आ और मेरे तेज के प्रभाव से मनुष्यों के मन के मंदिरों का भेद ले। इस समय में तेरे मन को ही जाँच रहा हूँ।''

राजा भोज के हृदय पर एक अजब-सी दहशत छा गई। वह निगाहें नीचे करके गर्दन खुजाने लगा। सत्य बोला, ''भोज! तू डरता है, तुझे अपने मन का हाल जानने में भी भय लगता है।'' भोज ने कहा कि नहीं इस बात से तो नहीं डरता, क्योंकि जिसने स्वयं को नहीं जाना उसने फिर क्या जाना! इसके सिवाय मैं तो स्वयं चाहता हूँ कि कोई मेरे मन की थाह ले और अच्छी तरह से जाँचे। व्रत और उपवास करके मैंने अपना फूल-सा शरीर काँटा बना लिया है। ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देते-देते सारा ख़ज़ाना खाली कर डाला है। कोई तीर्थ नहीं छोड़ा है। कोई नदी या तालाब नहाने से नहीं छोड़ा है। ऐसा कोई आदमी नहीं है, जिसकी निगाह में मैं पवित्र पुण्यात्मा न होऊँ। सत्य बोला, ''ठीक है, पर भोज, यह तो बता कि तू ईश्वर की निगाह में क्या है। क्या हवा में बिना धूप तृसरेणु कभी दिखाई देते हैं? पर सूरज की किरण पड़ते ही वे कैसे अनगिनत चमकने लग जाते हैं। क्या कपड़े से छाने हुए मैले पानी में किसी को कीड़े मालूम पड़ते हैं, पर जब खुर्दबीन शीशा लगाकर देखता है तो एक-एक बूँद में हज़ारों ही जीव दिखाई देने लगते हैं। तू उस बात के जानने से नहीं डरता है जिसे अवश्य जानना चाहिए तो आ मेरे साथ, आज मैं तेरी आँखें खोल दूँ।''

सत्य यह कहकर राजा को मंदिर के उस बड़े ऊँचे दरवाज़े पर ले गया, जहाँ से सारा बाग़ दिखाई देता था। वहाँ पहुँचकर सत्य ने उससे कहा कि भोज, मैं अभी तेरे पापकर्मों की कुछ भी चर्चा नहीं करूँगा, क्योंकि तूने स्वयं को बहुत निष्पाप समझ रखा है, पर यह तो बता कि तूने पुण्यकर्म कौन-कौन से किए हैं, जिनसे सर्व-शक्तिमान जगदीश्वर संतुष्ट होगा। राजा यह सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ, यह तो मानो उसके मन की बात थी। पुण्यकर्म के नाम ने उसके चित्त को कमल-सा खिला दिया। उसे निश्चय था कि पाप तो उसने चाहे किया हो, चाहे न किया हो, पर पुण्य उसने इतने किए हैं कि भारी से भारी पाप भी उनके पासंग में न होगा। राजा को वहाँ उस समय सपने में तीन पेड़ बहुत ऊँचे दिखाई दिए। वे फलों से इतने लदे हुए थे कि मारे बोझ के उनकी टहनियाँ धरती तक झुकी हुई थीं। राजा उन्हें देखते ही खुश हो गया और बोला, ''हे सत्य, यह ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया अर्थात् ईश्वर और मनुष्य दोनों की प्रीति के पेड़ हैं। देखो फलों के बोझ से धरती पर झुके ही जा रहे हैं। यह तीनों पेड़ मैंने ही लगाए हैं। पहले में तो वे सब लाल-लाल फल मेरे दान के कारण लगे हुए हैं। दूसरे में वे पीले फल मेरे न्याय के कारण और तीसरे में वे सब सफ़ेद फल मेरे तप का प्रभाव दिखलाते हैं।'' मानो उस समय चारों ओर से यह ध्वनि राजा के कान में चली आती थी कि धन्य हो महाराज, धन्य हो। आज तुम-सा पुण्यात्मा दूसरा कोई नहीं है। तुम साक्षात् धर्म के अवतार हो। इस लोक में भी तुमने ऊँचा पद पाया है और उस लोक में भी तुम्हें इससे अधिक ऊँचा पद मिलेगा। तुम मनुष्य और ईश्वर दोनों की आँखों में निर्दोष और निष्पाप हो। सूर्य के मंडल

में लोग कलंक बताते हैं, पर तुम पर पाप का एक छींटा भी नहीं लगा है। सत्य बोला, ''भोज, जब मैं इन पेड़ों के पास से आया था, जिन्हें तू ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया के पेड़ बता रहा है, तब तो उनमें फल-फूल कुछ भी नहीं लगा था, निरे ठूँठ से खड़े थे। अब इनमें ये लाल, पीले और सफ़ेद फल कहाँ से आ गए! यह सचमुच उन पेड़ों में फल लगे हैं या तुझे फुसलाने और ख़ुश करने के लिए किसी ने उनकी टहनियों से लटका दिए हैं? चल उन पेड़ों के पास चलकर देखें तो सही। मेरी समझ में तो वे लाल-लाल फल जिन्हें तू अपने दान के प्रभाव से लगे बता रहा है, वे यश और कीर्ति फैलाने की चाह अर्थात् प्रशंसा पाने की इच्छा ने इस पेड़ पर लगाए हैं।''

जैसे ही सत्य ने उस पेड़ को छूने के लिए अपना हाथ बढ़ाया तो राजा क्या देखता है कि वह सारे फल एक आन की आन में धरती पर उसी प्रकार गिर पड़े जैसे आसमान से ओले गिरते हैं। सारी धरती लाल हो गई। पेड़ों पर सिवाय पत्तों के और कुछ न बचा। सत्य ने कहा कि हे राजा, जैसे कोई किसी चीज़ को मोम से चिपकाता है, उसी तरह तूने स्वयं को भुलाने के लिए, प्रशंसा पाने की इच्छा से यह फल इस पेड़ पर लगा दिए थे। सत्य के तेज से वह मोम गल गया और पेड़ ठूँठ का ठूँठ रह गया। जो कुछ तूने दिया और किया वह सब दुनिया को दिखाने और मनुष्यों से प्रशंसा पाने के लिए किया। तूने केवल ईश्वर की भक्ति पाने और जीवों पर दया करने के लिए तो कुछ भी नहीं किया। यदि कुछ दिया हो या किया हो तो तू ही क्यों नहीं बताता। मूर्ख, इसी के भरोसे पर तू फूला हुआ स्वर्ग में जाने के लिए तैयार हुआ है!

राजा भोज ने एक ठंडी साँस ली। उसने तो औरों को भूला हुआ समझा था, पर वह सबसे अधिक भूला हुआ निकला। अब सत्य ने उस पेड़ की तरफ़ अपना हाथ बढ़ाया जो सोने की तरह चमकते पीले-पीले फलों से लदा हुआ था। सत्य का हाथ पास पहुँचते ही इसका भी वही हाल हो गया जो पहले का हुआ था। सत्य बोला, ''हे राजा, इस पेड़ में ये फल तूने स्वयं को भुलाने के लिए और स्वर्ग को प्राप्त करने की इच्छा से लगा लिए थे। कहने वाले ने ठीक ही कहा है कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के कर्मों से उसके मन की भावना का विचार करता है और ईश्वर मनुष्य के मन की भावना के अनुसार उसके कर्मों का हिसाब रखता है। तू अच्छी तरह जानता है कि यही न्याय तेरे राज्य की जड़ है। अगर न्याय न करेगा तो फिर वह राज्य तेरे हाथ में किस लिए रहेगा। जिस राज्य में न्याय नहीं होता है, वह तो बे-नींव का घर है। बुढ़िया के दाँतों की तरह हिलता है, अब गिरा तब गिरा। मूर्ख, तू ही क्यों नहीं बताता है कि यह तेरा न्याय स्वार्थ सिद्ध करने और सांसारिक सुख पाने की इच्छा के लिए है या ईश्वर की भक्ति एवं जीवों की दया के लिए है।''

यह सुनकर राजा भोज के माथे पर पसीना आ गया, आँखें नीचे कर लीं और कुछ भी जवाब न बन पड़ा। अब तीसरे पेड़ की बारी आई। सत्य का हाथ लगते ही उसकी भी वही हालत हुई जो पहले और दूसरे पेड़ की हुई थी। यह देखकर राजा अत्यंत लज्जित हुआ। सत्य ने कहा, ''मूर्ख, यह तेरे तप के फल कदापि नहीं हैं। इनको तो इस पेड़ पर तेरे अहंकार ने लगा रखा था। वह कौन-सा व्रत

या तीर्थयात्रा है जो तूने बिना अहंकार केवल ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया से किया है! तूने यह तप इसीलिए किया है कि जिससे तू स्वयं औरों से अच्छा और बढ़कर दिखे। ऐसे ही तप पर गोबर-गनेश, तू स्वर्ग प्राप्ति की उम्मीद रखता है, पर यह तो बता कि मंदिर की उन मुंडेरों पर वे पक्षी जैसे क्या दिखाई दे रहे हैं? कैसे सुंदर और प्यारे मालूम होते हैं! पंख तो उनके पन्ने के हैं और गर्दन फ़ीरोज़े की, दुम में सारे क़िस्म के जवाहिर जड़ दिए गए हैं।'' राजा के हृदय में घमंड की चिड़िया ने फिर फुरफुरी ली, मानो बुझते हुए दीपक की तरह फिर जगमगा उठा। जल्दी से जवाब दिया कि हे सत्य, यह जो कुछ तुम मंदिर की मुंडेरों पर देख रहे हो वह मेरे संध्या-वंदन का प्रभाव है। मैंने जो रातों में जाग-जागकर और माथा रगड़-रगड़कर इस मंदिर की देहली को घिसकर ईश्वर की स्तुति-वंदना और विनती-प्रार्थना की है, वही अब चिड़ियों की तरह पंख फैलाकर आकाश में जाती है। मानो ईश्वर के सामने पहुँचकर अब वही मुझे स्वर्ग में भिजवाएगी।

सत्य बोला, ''हे राजा, दीनबंधु जगदीश्वर अपने भक्तों की विनती सदा सुनता रहता है। जो मनुष्य शुद्ध हृदय और निष्कपट होकर नम्रता और श्रद्धा के साथ अपने दुष्कर्मों का पश्चाताप अथवा उनके क्षमा करने का निवेदन करता है, वह उसी समय सूर्य-चाँद को बेधकर पार हो जाता है। फिर क्या कारण है कि तू अब तक मंदिर की मुंडेर ही पर बैठा रहा। आ चल, देखें तो सही हम लोगों के पास जाने पर ये पक्षी आकाश में उड़ जाते हैं या उसी जगह पर परकटे कबूतरों की तरह फड़फड़ाया करते हैं।'' भोज डरा, लेकिन उसने सत्य का साथ नहीं छोड़ा। जब मुंडेर पर पहुँचा तो क्या देखता है कि वे सारे पक्षी जो दूर से बहुत सुंदर दिखाई दे रहे थे, मरे हुए पड़े हैं। उनके पंख नुचे-खुचे और बिलकुल सड़े हुए हैं। यह देखकर मारे बदबू के राजा का सिर भिन्ना उठा। दो एक पक्षी में जिनमें कुछ दम बाकी था, उन्होंने उड़ने का साहस भी किया, तो उनके पंख पारे की तरह भारी हो गए और उन्हें उसी स्थान पर दबाए रखा, तड़फते ज़रूर रहे पर उड़ने ज़रा भी न दिया। सत्य बोला, ''भोज, बस यही तेरे पुण्यकर्म हैं। इन्हीं स्तुति-वंदना और विनती-प्रार्थना के भरोसे पर तू स्वर्ग में जाना चाहता है! सूरत तो इनकी बहुत अच्छी है, पर जान बिलकुल भी नहीं है। तूने जो कुछ किया केवल लोगों को दिखाने के लिए किया, अपने हृदय से कुछ भी नहीं किया। जो तू एक बार भी अपने हृदय से पुकारा होता कि दीनबंधु, दीनानाथ, दीन-हितकारी, मुझ पापी, महा अपराधी एवं डूबते हुए को बचा और कृपा-दृष्टि कर, तो वह तेरी पुकार तीर की तरह भगवान के पास पहुँच जाती।''

राजा ने शर्म के मारे कुछ उत्तर न दिया। अब सत्य ने कहा, ''भोज, आ अब इस मंदिर के अंदर चलें और वहाँ तेरे मन के मंदिर को जाँचें। यद्यपि मनुष्य के मन के मंदिर में ऐसे-ऐसे अँधेरे तहखाने और तलघर हैं, जिनको सिवाय सर्वदर्शी, घट-घट व्यापी, सकल जगत्-स्वामी के और कोई नहीं देख या जाँच सकता है तो भी तेरा परिश्रम व्यर्थ न जाएगा।'' राजा उस सत्य के पीछे-पीछे मंदिर के अंदर घुसा, पर अब तो उसका हाल ही कुछ से कुछ हो गया। सचमुच स्वप्न का खेल-सा दिखाई दिया। चाँदी की सारी चमक जाती रही, सोने की चमक बिलकुल उड़ गई, दोनों में लोहे की तरह

जंग लग गई थी और जहाँ-तहाँ से मुलम्मा उड़ गया था। जवाहिरों की जगह केवल काले-काले दाग़ रह गए थे और संगमरमर की चट्टानों में हाथ-हाथ भर गहरे गढ्ढे पड़ गए थे। राजा यह देखकर भौचक-सा रह गया और धीमी आवाज़ में सत्य से पूछा कि यह टिड्डी दल की तरह इतने दाग़ इस मंदिर में कहाँ से आ गए? मैं जिधर भी निगाह उठाता हूँ, सिवाय काले-काले दाग़ों के और कुछ भी नहीं दिखाई देता, ऐसी तो छीपी छींट भी नहीं छापता है।

सत्य बोला, ''राजा, ये दाग़ जो तुझे मंदिर में दिखाई देते हैं, वे दुर्वचन हैं जो दिन-रात तेरे मुख से निकलते रहे हैं। याद कर, तूने क्रोध में आकर कैसी कड़वी-कड़वी बातें लोगों को सुनाई हैं। रुपया बचाने अथवा अधिक लाभ पाने के लिए और दूसरे का राज्य अपने हाथ में लेने अथवा किसी बराबर वाले से अपना मतलब निकालने और दुश्मनों को नीचा दिखाने के लिए तूने कितना झूठ बोला है! अपने दोष छिपाने और दूसरों की आँखों में अच्छा मालूम होने अथवा झूठी तारीफ़ पाने के लिए तूने कैसी-कैसी शेख़ियाँ हाँकी हैं! स्वयं को औरों से अच्छा औरों को स्वयं से बुरा दिखाने के लिए कहाँ तक बातें बनाई हैं, तुझे अब कुछ भी याद नहीं रहा, बिलकुल भूल गया है, पर ईश्वर के यहाँ कोई शब्द तेरे मुँह से निकलते ही बही में दर्ज़ हो गया है। तू इन दाग़ों को गिनने में असमर्थ है, पर उस घट-घट वासी और अनंत अविनाशी को एक-एक बात जो तेरे मुँह से निकली है याद है और याद रहेगी। उसके निकट भूत और भविष्य दोनों वर्तमान-से रहते है।''

भोज ने सिर न उठाया, पर दबी ज़बान से इतना मुँह से निकाला कि दाग़ पर ये हाथ-हाथ भर के गढ्ढे किस लिए पड़ गए हैं। सोने-चाँदी में मोर्चा लगकर ये ईंट पत्थर कहाँ से दिखाई देने लगे हैं! सत्य ने कहा-''राजा, क्या तूने कभी किसी को कोई चुभती हुई बात नहीं कही अथवा बोली-ठोली नहीं मारी? अरे नादान, यह बोली-ठोली तो गोली से अधिक काम कर जाती है। तू तो इन गढ्ढों को ही देखकर रोता है, पर तेरे ताने तो बहुतों की छातियों से पार हो गए हैं। जब अहंकार का मोर्चा लगा तो फिर यह दिखावे का मुलम्मा कब तक ठहर सकता है, स्वार्थ और अश्रद्धा के ईंट-पत्थर प्रकट हो आए हैं।'' राजा को इस समय चमगादड़ों ने बहुत तंग कर रखा था, मारे बदबू के सिर फटा जाता था, भनगे और पतंगों से सारा मंदिर भर गया था। राजा को बीच-बीच में पंख वाले साँप और बिच्छू भी दिखाई दे रहे थे। राजा घबराकर चिल्ला उठा कि यह मैं किस आफ़त में पड़ गया! इन कमबख़्तों को यहाँ किसने आने दिया? सत्य बोला, ''राजा, सिवाय तेरे इनको यहाँ कौन आने देगा! तू ही तो इन सबको लाया है। यह सब तेरे काम की बुरी वासना है। तूने समझा था कि जैसे समुद्र में लहरें उठा और मिटा करती हैं, उसी तरह मनुष्य के मन में भी संकल्प की मौज उठकर मिट जाती है। पर हे मूढ़! याद रख कि आदमी के चित्त में ऐसा कोई विचार नहीं आता जो जगतकर्ता, प्राणदाता परमेश्वर के सामने प्रत्यक्ष नहीं हो जाता हो। यह चमगादड़ और भनगे, साँप-बिच्छू और कीड़े-मकोड़े जो तुझे दिखाई दे रहे हैं, संकल्प-विकल्प हैं जो दिन-रात तेरे अंत:करण में उठते रहे और इन्हीं चमगादड़ और भनगे, साँप-बिच्छू और कीड़े-मकोड़ों की तरह तेरे हृदय के प्रकाश में

उड़ते रहे। क्या कभी तेरे हृदय में किसी राजा की ओर से कुछ द्वेष नहीं रहा है? उसके मुल्क-माल पर लोभ नहीं आया है? अपनी बड़ाई का अभिमान नहीं हुआ है।

राजा ने एक बड़ी लंबी ठंडी साँस ली और अत्यंत निराश होकर यह बात कही कि इस संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो कह सके कि मेरा हृदय शुद्ध है और मन में कुछ भी पाप नहीं है। इस संसार में निष्पाप रहना बड़ा कठिन है। जो पुण्य करना चाहते हैं, उनमें भी पाप निकल आता है। इस संसार में कोई भी व्यक्ति पाप से रहित नहीं है। ईश्वर के सामने पवित्र पुण्यात्मा कोई भी नहीं है। सारा मंदिर वरन सारी धरती और आकाश गूँज उठा, कोई भी नहीं, कोई भी नहीं। सत्य ने उस मंदिर की एक दीवार की तरफ देखा तो वह उसी संगमरमर से आइना बन गया। सत्य ने कहा, ''हे राजा, अब तू इस आइने का भी तमाशा देख और जो कर्तव्य कर्मों के न करने से तुझे पाप लगे हैं, उनका भी हिसाब देख।''

राजा उस आइने में देखता है कि जिस प्रकार बरसात की बढ़ी हुई किसी नदी के जल के प्रवाह में अनेक जीव-जंतु बह जाते हैं, उसी प्रकार अनगिनत सूरतें एक ओर से निकलती और दूसरी ओर अलोप होती चली जा रही हैं। कभी तो राजा को आइने में वे सब भूखे और नंगे दिखाई देते हैं, जिन्हें राजा खाने और पहनने को दे सकता था, पर न देकर दान का रुपया दूसरे हट्टे-कट्टे, मोटे-मुसटंड एवं खाते-पीते हुओं को देता रहा जो उसकी ख़ुशामद करते थे या किसी की सिफ़ारिश ले आते थे या उसके कारदारों को घूँस देकर मिला लेते थे या सवारी के समय माँगते-माँगते और शोर-गुल मचाते-मचाते उसे तंग कर डालते थे या दरबार में आकर उसे लज्जा के भँवर में गिरा देते थे या झूठा छापा-तिलक लगाकर उसे मगर के जाल में फँसा लेते थे या जन्मपत्री में भले-बुरे ग्रह बताकर कुछ धमकी भी दे देते थे या सुंदर कवित्त और श्लोक पढ़कर उसके चित्त को लुभाते थे।

कभी वे दीन-दुखी दिखलाई देते हैं, जिन पर राजा के कारदार ज़ुल्म किया करते थे और उसने कुछ भी उसकी तहक़ीक़ात और उपाय न किया। कभी उन बीमारों को देखता है, जिनको चंगा करा देना राजा के इख़्तियार में था, कभी वे व्यथा के जले और विपत्ति के मारे दिखाई देते हैं, जिनका हृदय राजा के द्वारा दो बात कहने से ठंडा और संतुष्ट हो सकता था। कभी अपने लड़के और लड़कियों को देखता है, जिन्हें वह पढ़ा-लिखाकर और अच्छी-अच्छी बातें सिखाकर बड़े-बड़े पापों से बचा सकता था। कभी उन गाँव और इलाकों को देखता है, जिनमें कुँए एवं तालाब खुदवाने और किसानों को मदद देने और उन्हें खेती-बाड़ी की नई-नई तरकीबें बताने से हज़ारों ग़रीबों का भला कर सकता था। कभी उन टूटे हुए पुल और रास्तों को देखता है, जिन्हें दुरुस्त करने से वह लाखों मुसाफ़िरों को आराम पहुँचा सकता था। राजा से अधिक देखा न जा सका। थोड़ी ही देर में घबराकर हाथों से अपनी आँखों को ढक लिया। वह अपने घमंड में उन सब कामों को तो सदा याद रखता था और उनकी चर्चा भी किया करता था, जिन्हें वह अपनी समझ में पुण्य के निमित्त किए हुए समझता था, पर उसने उन कर्त्तव्यों के विषय में कभी नहीं सोचा, जिन्हें अपनी उन्मत्तता से अचेत होकर छोड़ दिया था।

सत्य बोला, ''हे राजा, अभी से क्यों घबरा गया, आ इधर आ, इस दूसरे आइने में मैं तुझे अब उन पापों को दिखाता हूँ जो तूने अपने जीवन में किए हैं।'' अब राजा ने हाथ जोड़े और पुकारा कि बस महाराज, बस कीजिए, जो कुछ देखा है उसी से मैं तो पानी-पानी हो गया, कुछ भी बाक़ी न रहा, अब आगे मुझे क्षमा कीजिए। पर यह तो बताइए कि आपने यहाँ आकर मेरे शर्बत में ज़हर क्यों घोला और पकी-पकाई खीर में साँप का विष क्यों उगला और क्यों आपने मेरे आनंद को इस मंदिर में आकर नाश में मिलाया, जिसे मैंने सर्वशक्तिमान भगवान को अर्पण किया है। यह मंदिर चाहे बुरा और अशुद्ध क्यों न हो पर मैंने तो उसी के निमित्त बनाया है।

सत्य ने कहा, ''ठीक है, पर यह तो बता कि क्या भगवान इस मंदिर में बैठा है? यदि तूने भगवान को इस मंदिर में बैठाया होता तो फिर वह अशुद्ध क्यों रहता। ज़रा आँख उठाकर उस मूर्ति को तो देख जिसे तू जन्म-भर पूजता रहा है।'' राजा ने आँखें ऊपर उठाईं तो क्या देखता है कि वहाँ उस बड़ी ऊँची बेदी पर उसी की पत्थर की मूर्ति गढ़ी हुई रखी है और अभिमान की पगड़ी बाँधे हुए है। सत्य बोला कि हे मूर्ख, तूने जो काम किए केवल अपनी प्रतिष्ठा के लिए किए। इसी प्रतिष्ठा को पाने की सदा तेरी भावना रही है और इसी प्रतिष्ठा के लिए तूने स्वयं अपनी पूजा की है। हे मूर्ख, सकल जगत्स्वामी और घटघट अंतर्यामी क्या ऐसे मन रूपी मंदिर में भी अपना सिंहासन बिछने देगा जो अभिमान और प्रतिष्ठा-प्राप्ति की इच्छा इत्यादि से भरा है। सत्य का इतना कहना था कि सारी पृथ्वी एक बार फिर काँप उठी, मानो उसी दम टुकड़े-टुकड़े होना चाहती थी। आकाश में ऐसा शब्द हुआ कि जैसे प्रलय काल का मेघ गरजा हो। मंदिर की दीवार चारों ओर से अड़अड़ा कर गिर पड़ी, मानो उस पापी राजा को दबा देना चाहती थी और उस अहंकार की मूर्ति पर एक ऐसी बिजली गिरी कि वह धरती पर औंधे मुँह आ पड़ी। 'त्राहिमाम्, मैं डूबा' कहकर भोज चिल्लाया, तो उसकी आँखें खुल गईं और सपना टूट गया।

इस समय तक रात बहुत बीत चुकी थी। आसमान के किनारों पर लाली फैल गई थी। चिड़ियाँ चहचहा रही थीं। एक ओर से शीतल मंद सुगंध पवन चल रही थी, दूसरी ओर से बीन और मृदंग की ध्वनि आ रही थी। बंदीजन राजा का यश गाने लगे थे, हरकारे हर तरफ़ काम करने के लिए दौड़ने लगे, कमल खिलने लगे और कुमुद कुम्हलाने लगे। राजा पलंग से उठा, पर भारी मन से, माथा थामे हुए। उसे न हवा अच्छी लगती थी न गाने बजाने की सुध-बुध थी। उसने सबसे पहले चोबदार को यह हुक्म दिया कि इस नगर में जो भी अच्छे पंडित हैं, उन्हें शीघ्र ही मेरे पास लेकर आओ। मैंने आज एक ऐसा सपना देखा है कि जिसके आगे अब यह सारा राग सपना मालूम होता है। उस सपने के स्मरण से ही मेरे रोंगटे खड़े हुए जा रहे हैं। राजा के मुख से हुक्म निकलने की देर थी, चोबदार ने शीघ्र ही तीन पंडितों को जो उस समय वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य और बृहस्पति के समान प्रख्यात थे, राजा के सामने लाकर खड़ा कर दिया। पंडितों को सामने देखकर राजा ने उनसे पूछा कि वह कौन-सा उपाय है, जिससे यह पापी मनुष्य ईश्वर के कोप से छुटकारा पा जाए। उनमें

से एक बूढ़ा पंडित राजा से निवेदन करते हुए बोला, ''धर्मावतार, यह भय तो आपके शत्रुओं को होना चाहिए। आप जैसे पवित्र पुण्यात्मा के हृदय में ऐसा संदेह क्यों उत्पन्न हुआ? आप अपने पुण्य के प्रभाव का जामा पहनकर बे-खटके परमेश्वर के सामने जाइए।''

राजा क्रोध करके बोला, ''बस अपनी वाणी को अधिक परिश्रम न दीजिए और इसी दम अपने घर की राह लीजिए। क्या आप फिर उस पर्दे को डालना चाहते हैं जो सत्य ने मेरे सामने से हटाया है और मेरी बुद्धि की आँखों को बंद करना चाहते हैं, जिन्हें सत्य ने खोला है! इस पवित्र परमात्मा के सामने अन्याय कभी नहीं ठहर सकता। मेरे पुण्य का जामा उसके आगे निरा चीथड़ा है। यदि वह मेरे कामों पर निगाह रखेगा तो मेरा नाश हो जाएगा और मेरा कहीं पता भी न लगेगा।'' इसी समय दूसरा पंडित बोल उठा, ''महाराज, परब्रह्म परमात्मा जो आनंद-स्वरूप है। उसकी दया के सागर का कब किसी ने वारापार पाया है! वह हमारे इन छोटे-छोटे कामों पर निगाह नहीं रखा करता है! बल्कि एक कृपा-दृष्टि से सारा बेड़ा पार लगा देता है।'' राजा ने आँखें दिखलाते हुए कहा, ''महाराज, आप भी अपने घर को पधारिए। आपने ईश्वर को ऐसा अन्यायी ठहरा दिया कि वह किसी पापी को सज़ा नहीं देता है, सब धान बाईस पसेरी तोलता है। इसी संसार में क्यों नहीं देख लेते, जो आम बोता है, वह आम खाता है और जो बबूल लगाता है, वह काँटे चुनता है, तो क्या उस लोक में जो जैसा करेगा वह सर्वदर्शी एवं घटघट व्यापी से उसका बदला वैसा ही न ले पाएगा? सारी सृष्टि पुकार कर कहती है और हमारा अंत:करण भी इस बात की गवाही देता है कि ईश्वर अन्याय नहीं करता है। जो जैसा करेगा वैसा ही वह ईश्वर से उसका बदला पाएगा।''

अब तीसरा पंडित आगे बढ़ा और इस प्रकार बोला, ''महाराजाधिराज, परमेश्वर के यहाँ से हम लोगों को वैसा ही बदला मिलता है जैसा कि हम लोग काम करते हैं, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है। आप यथार्थ फ़रमाते हैं, परमेश्वर अन्याय कभी नहीं करता है, पर यह इतने प्रायश्चित, होम-यज्ञ, जप-तप और तीर्थयात्रा किस लिए बनाए गए हैं? यह इसीलिए हैं कि जिनके करने से परमेश्वर हम लोगों का अपराध क्षमा करे और वैकुंठ में अपने पास रहने के लिए स्थान दे।'' राजा ने कहा, ''पंडित जी, कल तो मैं आपकी सब बातें मान सकता था लेकिन अब तो मुझे इन कामों में भी ऐसा कोई काम दिखाई नहीं देता है, जिसके करने से यह पापी मनुष्य पवित्र पुण्यात्मा हो जाए। वह कौन-सा जप-तप, तीर्थयात्रा, होम-यज्ञ और प्रायश्चित है, जिसके करने से हृदय शुद्ध हो जाए और व्यक्ति में अभिमान न आने पाए। आदमी को फुसला लेना तो सहज है, पर उस घटघट व्यापी अंतर्यामी को कोई क्योंकर फुसलाए! जब मनुष्य का मन ही पाप से भरा हुआ है, तो फिर उससे कोई पुण्यकर्म कहाँ बन पाएगा। पहले आप उस स्वप्न को सुनिए जो रात में मैंने देखा है, तब फिर बाद में वह उपाय बताइए जिससे पापी मनुष्य ईश्वर के कोप से छुटकारा पा जाए।''

अब राजा ने जो कुछ रात को स्वप्न में देखा था सब ज्यों का त्यों उस पंडित को कह सुनाया। पंडित जी तो सुनते ही अवाक् रह गए और उन्होंने अपना सिर नीचे झुका लिया। राजा ने निराश

होकर तुषानल में जलकर मर जाना चाहा, पर एक परदेशी आदमी–सा जो उन पंडितों के साथ बिना बुलाए वहाँ आया था, सोचता–विचारता उठ खड़ा हुआ और धीरे से बोला, ''महाराज, हम लोगों का कर्ता ऐसा दीनबंधु एवं कृपासिंधु है कि आप उससे मिलने के लिए अपने सच्चे मन से उसी से राह माँगिए तो वह आपका मार्गदर्शन अवश्य करेगा।'' हे पाठकजनो, क्या तुम भी राजा भोज की तरह भगवान को ढूँढ़ते हो और उससे मिलने की प्रार्थना करते हो? भगवान तुम्हें शीघ्र ही सद्‌बुद्धि दे और सद्‌मार्ग पर चलाए, यही हमारा अंतःकरण से आशीर्वाद है।

जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।

–राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद